देवनागरी उर्दू

हज़रत ईसा अल-मसीह का दूसरा हुक्म यानी पाक गुस्ल लेना यानी बपतिस्मा लेना

हज़रत ईसा अल-मसीह का दूसरा हुक्म यानी पाक गुस्ल लेना यानी बपतिस्मा लेना

आज हम दूसरा हुक्म सीखेंगे, जो हमारे ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ने दिया। ये हुक्म है *पाक ग़ुस्ल लेना* यानी बपतिस्मा लेना। जब हम तौबा करके और अपने गुनाहों को छोड़कर ईमान लाते हैं, तब हम बपतिस्मा लेते हैं। ये इस बात की निशानी है कि हमने दिल से तौबा की और ईमान लायें। ये क़दम खुदावंद ईसा अल-मसीह के पीछे चलने के लिए बहुत अहम है।

आज हम *इंजील शरीफ़* से एक क़स्सा देखेंगे – *आमाल 8:26-38*। इसमें अल्लाह ने अपने एक बंदे, हज़रत फ़िलिप्पुस को भेजा, ताकि वो, एक दूसरे शख़्स को ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह का शागिर्द बनाए।

26एक दिन रब के फ़रिश्ते ने फ़िलिप्पुस से कहा, "उठकर जुनूब की तरफ़ उस राह पर जा जो रेगिस्तान में से गुज़रकर यरूशलम से ग़ज़्ज़ा को जाती है।"

27फ़िलिप्पुस उठकर रवाना हुआ। चलते चलते उस की मुलाक़ात इथोपिया यानी मुल्के हब्शा की मलिका कंदाके के एक ख़्वाजासरा से हुई। मलिका के पूरे ख़ज़ाने पर मुक़र्रर यह दरबारी इबादत करने के लिए यरूशलम गया था

28और अब अपने मुल्क में वापस जा रहा था। उस वक़्त वह रथ में सवार यसायाह नबी की किताब की तिलावत कर रहा था।

29रूहुल-क़ुद्स ने फ़िलिप्पुस से कहा, "उसके पास जाकर रथ के साथ हो ले।"

30फ़िलिप्पुस दौड़कर रथ के पास पहुँचा तो सुना कि वह यसायाह नबी की किताब की तिलावत कर रहा है। उसने पूछा, "क्या आपको उस सबकी समझ आती है जो आप पढ़ रहे हैं?"

31दरबारी ने जवाब दिया, "मैं क्योंकर समझूँ जब तक कोई मेरी राहनुमाई न करे?" और उसने फ़िलिप्पुस को रथ में सवार होने की दावत दी।

32कलामे-मुक़द्दस का जो हवाला वह पढ़ रहा था, यह था,

'उसे भेड़ की तरह ज़बह करने के लिए ले गए।

जिस तरह लेला बाल कतरनेवाले के सामने ख़ामोश रहता है,

उसी तरह उसने अपना मुँह न खोला।

33उस की तज़लील की गई और उसे इनसाफ़ न मिला।

कौन उस की नसल बयान कर सकता है?

क्योंकि उस की जान दुनिया से छीन ली गई।'

www.taleemulkalam.org

34दरबारी ने फ़िलिप्पुस से पूछा, "मेहरबानी करके मुझे बता दीजिए कि नबी यहाँ किसका ज़िक्र कर रहा है, अपना या किसी और का?"

35जवाब में फ़िलिप्पुस ने कलामे-मुक़द्दस के इसी हवाले से शुरू करके उसे ईसा के बारे में ख़ुशख़बरी सुनाई।

36सड़क पर सफ़र करते करते वह एक जगह से गुज़रे जहाँ पानी था। ख़्वाजासरा ने कहा, "देखें, यहाँ पानी है। अब मुझे बपतिस्मा लेने से कौन-सी चीज़ रोक सकती है?"

37[फ़िलिप्पुस ने कहा, "अगर आप पूरे दिल से ईमान लाएँ तो ले सकते हैं।" उसने जवाब दिया, "मैं ईमान रखता हूँ कि ईसा मसीह अल्लाह का फ़रज़ंद है।"]

38उसने रथ को रोकने का हुक्म दिया। दोनों पानी में उतर गए और फ़िलिप्पुस ने उसे बपतिस्मा दिया।

इस वाकिए से, खुदावंद ईसा अल-मसीह के बारे में हम क्या सीखते हैं?

सब से पहले, हम यह देखते हैं के दूसरे पैग़म्बरो ने भी खुदावंद ईसा अल-मसीह के आने की पैशनगोई की थी। इस वाकिए में, ख़्वाजा-सरा हज़रत यसायाह अलैहिस्सलाम के तैरप्पनवें बाब से पढ़ रहा था, जिसने हमारे गुनाहों के लिए खुदावंद ईसा अल-मसीह की क़ुरबानी वाली मौत के बारे में बताया। यह खुदावंद ईसा अल-मसीह की अहमियत को ज़ाहिर करता है। बहुत से पैग़म्बरों ने खुदावंद ईसा अल-मसीह के आने के बारे में बात की। दरअसल, खुदावंद ईसा अल-मसीह के आने के बारे में, किताब-ए-मुक़द्दस में 300 से ज़्यादा पेशनगौइयां हैं, जो खुदावंद ईसा अल-मसीह से पहले आए हुए पैग़म्बरों ने की थी। हम यह भी देखते हैं के खुदावंद ईसा अल-मसीह तलाश करने वालों को अपने पास ला सकते हैं। इस ख़्वाजा-सरा के पास कोई सिखाने वाला नहीं था और वो रेगिस्तान में अकेला था। मगर खुदा ने उसे देखा। इस लिए, खुदा ने अपने रसूल को इस ख़्वाजा-सरा के पास भेजा। यहाँ हम खुदा की अज़मत देखते हैं। वो सब कुछ जानता है और सच्चे मन से तलाश करने वालों को अपने पास ला सकता है।

इस वाक़िए से लोगों के बारे में हम क्या सीखते हैं?

ख़्वाजा-सरा का यह वाक़िया हमारे लिए हौसला अफ़ज़ाई का नमूना होना चाहिए। यह एक ऐसा शख्स था, जो एक ऐसे मुल्क में रहता था, और जो सच्चे खुदा की इबादत नहीं करता था। लेकिन, यह आदमी सच की तलाश कर रहा था। वो इतना मुतजस्सुस यानी जोश में था कि वो सच की तलाश में हब्शा से येरुशलम तक हज़ारों मील का सफर करके आया। येरुशलम में, उसे खुदा का कलाम मिला और वो उसे पढ़ रहा था, लेकिन उसे समझने में मुश्किल हो रही थी। आज, बहुत से लोग इस हब्शी ख़्वाजा-सरा की तरह खुदा की तलाश कर रहे हैं।

मुझे उम्मीद है कि आप भी उन में से होगें। अगर आप तलाश कर रहे हैं, तो मुझे उम्मीद है कि आप खुदावंद ईसा अल-मसीह की पैरवी करने के लिए तैयार होंगे, जिस तरह इस शख्स ने किया, और जैसे जैसे आप उनके बारे में और सीखेंगे।

फिलिप्पुस और हब्शी ख़्वाजा-सरा से हम क्या सीखते हैं?

इस वाकिये में, फिलिप्पुस और हब्शी खौजा-सरा दोनों आला नमूने पेश करते हैं। फिलिप्पुस हर हाल में खुदा की फरमाबरदारी करने के लिए तैयार था। जब एक फरिश्ता फिलिप्पुस के पास ज़ाहिर हुआ, तो उसे एक शहर से रेगिस्तान में जाने के लिए कहा गया। उसने खुदा के हुक्म पर सवाल नहीं उठाया। इसके बजाय, उसने फरमाबरदारी की। फिर, जब उसने खौजा-सरा के रथ को देखा, तो

www.taleemulislam.org

रूह ने उसे बताया, "उसके पास जाकर रथ के साथ हो ले।" दरअसल, यह एक ख़तरनाक क़दम था क्यूँके खौजा-सरा एक दौलतमंद शख्स था और उसके पास मुहाफ़िज़ भी थे। लेकिन फिलिप्पुस ने फ़ौरन फरमाबरदारी की।

फिलिप्पुस की तरह, हमें भी फ़ौरन खुदा की फरमाबरदारी करने के लिए तैयार रहना चाहिए, फिर चाहे कुछ भी हो। फिलिप्पुस को जब मौका मिला, तो वो खुदावंद ईसा अल-मसीह के बारे में बताने के लिए भी तैयार था। उसने एक ऐसे आदमी को देखा जो सुनने के लिए तैयार था और फ़ौरन उनके बारे में बताया। इसी तरह, हमें भी दूसरों की खुदा की पैरवी करने में मदद करना सीखना चाहिए।

हब्शा खौजा-सरा सच की तलाश और फरमाबरदारी की एक खूबसूरत तस्वीर है। सच की उसकी ख्वाहिश इतनी ज़्यादा थी कि उसने खुदा की तलाश में हज़ारों मील का सफर बहुत सा खर्च उठाकर किया। उसने बहुत मेहनत से पढ़ा, जैसा कि हम देखते हैं जब वो हज़रत यसायाह अलैहिस्सलाम का सहीफा पढ़ रहा था। वो सच सीखने के लिए फिलिप्पुस की बात सुनने के लिए तैयार था। जब उसे सच मिला, तो उसने फ़ौरन तौबा की और उस पर ईमान लाया। उसने कहा, "देखें, यहाँ पानी है। अब मुझे बपतिस्मा लेने से कौन-सी चीज़ रोक सकती है?"

पाक गुस्ल यानी बपतिस्मा के बारे में हम क्या सीखते हैं।

क्या आपने तौबा की है और हज़रत ईसा अल-मसीह पर ईमान लाये हैं? अगर आप ईमान लाये है, तो आपको भी पाक गुस्ल में, जिसे बपतिस्मा कहते हैं, उनकी पैरवी करनी चाहिए। जैसा कि हब्शा खौजा-सरा के साथ हुआ, बपतिस्मा एक खास तरह का गुस्ल है जब हज़रत ईसा अल-मसीह पर दूसरा कोई ईमान रखने वाला हमें पानी में पूरी तरह डुबो देता है। क्यूँके खुदावंद ईसा अल-मसीह इतने ताक़तवार हैं, हमें अपनी ज़िन्दगी में सिर्फ़ एक बार बपतिस्मा लेने की ज़रूरत है। बपतिस्मा से, हम उनकी ताक़त और फ़ज़ल से पाक हो जाते हैं। अपने बपतिस्मा में, हम खुदा के लोगों का हिस्सा बन जाते हैं।

इंजील शरीफ़ में रोमियों की किताब के बाब - 6 बपतिस्मा के मानी के बारे में और सिखाता है:

3या क्या आपको मालूम नहीं कि हम सब जिन्हें बपतिस्मा दिया गया है इससे मसीह ईसा की मौत में शामिल हो गए हैं?

4क्योंकि बपतिस्मे से हमें दफ़नाया गया और उस की मौत में शामिल किया गया ताकि हम मसीह की तरह नई ज़िंदगी गुज़ारें, जिसे बाप की जलाली क़ुदरत ने मुरदों में से ज़िंदा किया।

5चूँकि इस तरह हम उस की मौत में उसके साथ पैवस्त हो गए हैं इसलिए हम उसके जी उठने में भी उसके साथ पैवस्त होंगे।

यह इंजील शरीफ़ का हिस्सा बपतिस्मा के रूहानी मानी सिखाता है। जब हम बपतिस्मा में पानी के नीचे जाते हैं, तो हम अपनी पुरानी ज़िन्दगियों से खुदावंद ईसा अल-मसीह के साथ मर जाते हैं। बिल्कुल जैसे वो मारे गए और क़ब्र में दफ़न किए गए, हम भी अपने आप को अपनी पुरानी ज़िन्दगियों से मरा हुआ समझते हैं।

फिर, जब हम पानी से बाहर आते हैं, तो हमें खुदावंद ईसा अल-मसीह के साथ एक नई ज़िन्दगी दी जाती है। बिल्कुल जैसे वो मुरदों में से जी उठे, हम बपतिस्मा के पानी से एक नई ज़िन्दगी में बाहर आते हैं। अगर आप खुदावंद ईसा अल-मसीह के साथ एक नई ज़िन्दगी चाहते हैं, तो आपको बपतिस्मा में उनकी फरमाबरदारी करनी चाहिए।

हमसे जुड़ने के लिए आइकॉन पर क्लिक करें.....

www.taleemulkalam.org